

**Demand to take steps for early release of innocent Muslims
lodged in prisons in the country**

चौधरी मुनब्वर सलीम (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति जी, मैं सोचता हूँ कि यह महान सदन और इसमें बैठे हुए सदस्य हर वक्त बेचैन रहते हैं, इस बात के लिए कि किस तरह कमजोर लोगों को इंसाफ मिले और वे कौन से तरीके अपनाए जाएं, जिससे ज़ालिम को जुल्म करने से रोका जा सके। यही मंशा सदन और इसके सदस्यों को महान कलहवाती है। मैं आज इस महान सदन में हिंदुस्तान की 1/5 आबादी, यानी मुसलमानों के साथ होने वाले जुल्म की दर्दनाक कहानी इस उम्मीद के साथ बयान कर रहा हूँ कि इस धर्म-निरपेक्ष संसद से कमजोर मुसलमानों को इंसाफ मिलेगा। मैं इस वक्त देश की सबसे बड़ी हिन्दी पत्रिका इंडिया टुडे की संवेदनशीलता को सलाम करने के लिए खड़ा हुआ हूँ, जिसने यह लिखा है कि हिंदुस्तानी मुसलमान देश में कम और जेलों में ज्यादा हैं। मैं देश की सरकार और सदन के सदस्यों से गुज़ारिश करता हूँ कि मुसलमान 1857 की क्रांति से लेकर कारगिल के युद्ध तक, हर मोर्चे पर भारत मां का सच्चा सपूत साबित हुआ है, फिर इस महान पत्रिका को यह विश्लेषण क्यों करना पड़ा? महात्मा गांधी का सपना तो तभी पूरा होगा, जब किसी कमजोर के साथ नाइंसाफी नहीं होगी। शहीदे आजम टीपू सुल्तान, बहादुरशाह जफर, शाहनवाज खान, अशफाक उल्लाह खान, हवलदार अब्दुल हमीद से लेकर कारगिल के उन शहीदों तक की कुर्बानी इस बात का ऐलान है कि मुसलमान ने कभी हिंदुस्तान से बेवफाई नहीं की है, फिर उसकी दुर्गति क्यों है, वे देश में कम और जेलों में अधिक क्यों हैं? यदि मुल्क को चलाने वाले इस बारे में संजीदा नहीं होंगे, तो मुल्क के सामने यह सवाल हमेशा खड़ा रहेगा।

इसलिए मैं दरखास्त करता हूँ और शिद्दत से मुतालबा करता हूँ कि जेलों में बंद तमाम बेकसूर मुसलमानों को रिहा करना चाहिए और उन अफसरान को सख्त तरीन सज़ा देनी चाहिए, जिन्होंने बेगुनाहों को जेल की काल-कोठरियों में बंद कर रखा है। मैं मानता हूँ कि अगर सरकार उपरोक्त फैसला लेती है, तो मुल्क में रूल ऑफ लॉ पर लोगों का विश्वास बढ़ेगा और मोहब्बत की हवाओं में इज़ाफा होगा। मैं भारत सरकार से तत्काल प्रभावी कदम उठाने की उम्मीद करते हुए, अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

چودھری منور سلیم (اُتر پردیش): اب سبھا پتی جی، میں سوچتا ہوں کہ یہ مہن سدن اور اس میں بیٹھے ہوئے سمنے پر رقت بے چین رہتے ہیں، اس بات کے لئے کہ کس طرح کمزور لوگوں کو انصاف ملے اور وہ کون سے طریقے اپنائے جائیں، جن سے ظالم کو ظلم کرنے سے روکا جا سکے۔ یہی منشا سدن اور اس کے سمنوں کو مہن کھواتی ہے۔ میں آج اس مہن

†[]Transliteration in Urdu Script.

سڈن میں ہندوستان کی 1/5 آبادی یعنی مسلمانوں کے ساتھ ہونے والے ظلم کی دردناک کہانی اس امید کے ساتھ بیان کر رہا ہوں کہ اس دھرم-نریکس مسند سے کمزور مسلمانوں کو انصاف ملے گا۔ میں اس وقت دیش کی سب سے بڑی ہندی پٹریکا 'انڈیا ٹوڈے' کی سٹیڈن-شیلٹا کو سلام کرنے کے لئے کھڑا ہوا ہوں، جس نے یہ لکھا ہے کہ ہندوستانی مسلمان دیش میں کم اور جیلوں میں زیادہ ہے۔ میں دیش کی سرکار اور سڈن کے مسدیوں سے گزارش کرتا ہوں کہ مسلمان 1857 کی کرائنتی سے لے کر کارگل کے پڈھ تک، ہر مورچے پر بھارت ماں کا سچا سپوت ثابت ہوا ہے، پھر اس مہان پٹریکا کو یہ وٹلیشن کیوں کرنا پڑا؟ مہاتما گاندھی کا سہنا تو تبھی پورا ہوگا، جب کسی کمزور کے ساتھ ناانصافی نہیں ہوگی۔ شہید اعظم ٹیپو سلطان، بہادر شاہ ظفر، شاہنواز خان، اشفاق اللہ خان، حوالدار عبدالحمید سے لے کر کارگل کے ان شہیدوں تک کی قربانی اس بات کا اعلان ہے کہ مسلمان نے کبھی ہندوستان سے بے وفائی نہیں کی ہے، پھر اس کی درگتی کیوں ہے، وہ دیش میں کم اور جیلوں میں ادھیک کیوں ہے؟ اگر ملک کو چلانے والے اس بارے میں سنجیدہ نہیں ہوں گے، تو ملک کے سامنے یہ سوال ہمیشہ کھڑا رہے گا۔

اس لئے میں درخواست کرتا ہوں اور شدت سے مطالبہ کرتا ہوں کہ جیلوں میں بند تمام بے قصور مسلمانوں کو رہا کرنا چاہئے اور ان افسران کو سخت ترین سزا دینی چاہئے، جنہوں نے بے گناہوں کو جیل کی کال-کوٹھریوں میں بند کر رکھا ہے۔ میں مانتا ہوں کہ اگر سرکار اپ-روکت فیصلہ لیتی ہے، تو ملک میں 'رول آف لاء' پر لوگوں کا وشواس بڑھے گا اور محبت کی ہواؤں میں اضافہ ہوگا۔ میں بھارت سرکار سے تھکال پر بھاوی قدم اٹھانے کی امید کرتے ہوئے، اپنی بات کو سمپت کرتا ہوں۔ دھنیوداد۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri N.K. Singh, not present; Shri Avtar Singh Karimpuri, not present; Shri Palvai Govardhan Reddy, not present; Shri Basawaraj Patil, not present; Dr. Ram Prakash, not present; Shri Tarun Vijay, not present; Shrimati Jaya Bachchan, not present; Shri Rama Chandra Khuntia.